क्या वह स्वभाव पहला सरकार अब नहीं है भजन लिरिक्स

क्या वह स्वभाव पहला,
सरकार अब नहीं है,
दीनों के वास्ते क्या,
दरबार अब नहीं है।bd।

या तो दयालु मेरी,
दृढ़ दीनता नहीं है,
या दीन कि तुम्हें ही,
दरकार अब नहीं है,
जिससे कि सुदामा,
त्रयलोक पा गया था,
क्या उस उदारता में,
कुछ सार अब नहीं है।
क्या वह स्वभाव पहलां,
सरकार अब नहीं है,
दीनों के वास्ते क्या,
दरबार अब नहीं है।bd।

पाते थे जिस हृदय का,
आश्रय अनाथ लाखों,
क्या वह हृदय दया का,
भण्डार अब नहीं है,
दौड़े थे द्वारिका से,
जिस पर अधीर होकर,
उस अश्रु 'बिन्दु' से भी,
क्या प्यार अब नहीं है।
क्या वह स्वभाव पहलां,
सरकार अब नहीं है,
दीनों के वास्ते क्या,
दरबार अब नहीं है।bd।

क्या वह स्वभाव पहला,
सरकार अब नहीं है,
दीनों के वास्ते क्या,
दरबार अब नहीं है।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com